श्री नमिनाथ विधान

रचयिता

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत

मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री नमिनाथ विधान
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्रीविद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज
प्रसंग	:	मुनिश्री सुव्रतसागरजी महाराज का स्वर्णिम अवतरण वर्ष एवं रजत दीक्षा वर्ष 2023
संयोजक	:	बा॰ ब्र॰ संजय भैया, मुरैना
संस्करण	:	तृतीय, 1100 प्रतियाँ
सहयोग राशि	:	30/- (पुनः प्रकाशन हेतु)
प्रकाशक	:	विद्या सुव्रत संघ
प्राप्ति स्थान	:	१. बा॰ ब्र॰ संजय भैयाजी, मुरैना Mob.- 9425128817 २. अमर ग्रंथालय इंदौर, 9425478846 ३. अरिहंत जैन सागर, 8236060889
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व-पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥ तेरा...
जिन माँ बापू ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
जो धरती नभ आश्रय देते, उनका मंगल होवे।
जिस जलवायु से जीते हैं, उसका मंगल होवे॥
जिस अग्नि से जीवन चलता, उसका मंगल होवे।
जिन तरुओं से भोजन मिलता, उनका मंगल होवे॥३॥तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहंत सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥

अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहंत प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ 1॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ 2॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ 3॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ 4॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ 5॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ 6॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ 7॥

हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहंत फिर सिद्ध हम भी॥8॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥9॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(अवतार/लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ्य चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री वृषभनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ्य समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥
अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।

ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य (शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य (आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धयादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥
पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य (सखी)

यह अर्घ्य चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥

जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य (त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ्य अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ्य चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, सुव्रत दान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री नमिनाथ विधान

जय बोलिये
निर्मल मूरत, सुंदर सूरत,
भव्यों के आश्रय,
भक्त श्रद्धालय,
कल्याणकों के अधिपति,
जगत्-पूज्य लक्ष्मीपति,
श्री के स्वामी,
शिव अधिगामी,
अन्तर्यामी, केवलज्ञानी
परमपूज्य
श्री नमिनाथ भगवान् की जय॥

भजन

(लय : मिलता है सच्चा सुख....)

मिलती है आतम ज्योति हमें, नमिनाथ प्रभु की भक्ति से।
इसलिए नमोस्तु हम करते, शास्त्रोक्त विधि यथाशक्ति से॥
मिलती है आतम.....॥ 1॥

चाहे आँधी या तूफान चलें, चाहे लू लपटें ओला बरसें।
चाहे दुनियाँ अपनी चाल चले, यह दीप बुझे न अनीति से॥
मिलती है आतम.....॥ 2॥

चाहे छिद जायें चाहे कट जायें,चाहे घुट-घुट कर भी मर जायें।
चाहे अंध उदासी भर जाये, पर दीप जले प्रभु-प्रीति से॥
मिलती है आतम.....॥ 3॥

यदि कृपा-दृष्टि प्रभु आप करें, तो चरण शरण में डले रहें।
हो आप दयालु राह करें, निज कार्य बनायें युक्ति से॥
मिलती है आतम.....॥ 4॥

हम भले-बुरे हैं जैसे भी, पर नाथ! आपके बेटे ही।
अब हर के भटकन कैसे भी, झट मुक्त करो आसक्ति से॥
मिलती है आतम.....॥ 5॥

हर दर पर तो ठोकर खाई, पर ज्ञान ज्योति न जल पाई।
अब चरण-शरण तेरी पाई, तो क्या नाता पर-भक्ति से॥
मिलती है आतम.....॥ 6॥

यह देह दीप बस बन जाये, प्रभु भक्तिज्योति जलती जाये।
परमात्म आत्म को दिख जाये, तो 'सुव्रत' मिलवें मुक्ति से॥
मिलती है आतम.....॥ 7॥

श्री नमिनाथ विधान

स्थापना

(दोहा)

मंगलमय नमिनाथ हैं, करें सर्व उपकार।
आत्मज्ञान रस लीन हैं, भव-सागर के पार॥
जिनके चरण सरोज में, विनम्र चारों धाम।
तारण-तरण जहाज को, बारम्बार प्रणाम॥

(लय : शान्तिविधानवत्)

हे परम पूज्य नमिनाथ प्रभो! हे परमपूज्य जगनाथ प्रभो!
प्रभु लोक शिखर के तुम वासी, फिर भी घट-घट में वास करो॥
दुनियाँ के बंधन टूट पड़े, जब नाम ध्यान में आता है।
दर्शन पूजन जप तप करके, हर आत्म बंध खुल जाता है॥

जब चरण-शरण तेरी हो तो, भव भोग शरीर रुचें कैसे।
हर पुण्य लगे सार्थक लेकिन, हम रहें आप बिन अब कैसे॥
इसलिए रचायी जिन-पूजन, बस अपनी पूर्ण मिटे दूरी।
नत माथ नमोस्तु करते हम, हो मनोकामना झट पूरी॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं....)

सब पूज रहे प्रभु के चरणा, जिनसे मिलता निज रूप घना।
वह आतम का शृंगार करें, वह शीघ्र हमें भव पार करें॥
अब जन्म मृत्यु का दुख हरने, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, जल स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्युविनाशनाय जलं.....।

विपरीत समय में डर न उन्हें, जिनपर करुणा प्रभु बरसाते।
कर चारु चन्द्र सम चिन्तन वो, चैतन्य चिदातम निज ध्याते॥
कारुण्य धार वह पाने को, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, शीत् स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं.....।

आशीष आपका सब चाहें, जो हर लेता संकट आहें।
चित्-पिण्ड अखण्ड प्रदान करें, दें मोक्षमहल शाश्वत राहें॥
आशीष हाथ तेरा पाने, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुंज स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्.....।

अनकूल रहें प्रतिकूल रहें, यों रहें खुशी ज्यों फूल रहें।
सम्मान मिले अपमान मिले, बस प्रभु चरणों की धूल मिले॥
वह चरण धूल प्रभु की पाने, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, पुष्प स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं.....।

इन नयन कटोरों में केवल, पकवान वसे भगवान् नहीं।
भगवान् बिना निजज्ञान नहीं, निजज्ञान बिना कल्याण नहीं॥
भगवान् वसो इन नयनों में, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, चरु स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं.....।

इस पाप अँधेरे के कारण, निज आत्मज्योति आच्छादित है।
जो करे आरती दीप जला, वह पाता ज्ञान प्रकाशित है॥
वह आत्म ज्योति प्रकटाने को, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, दीप स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं.....।

निज-निधियों पर शिव-गलियों पर, अत्यन्त ठोस है कर्म शिला।
पर धूप-कुदाल लिया जिसने, निज-वैभव उसको शीघ्र मिला॥

वह कर्म शिला चटकाने को, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, धूप स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं.....।

भगवान् यही वरदान मिले, प्रभु शीघ्र हमें तुम अपना लो।
जो मोक्षसिंधु तक फैली है, उस जिन-गंगा में नहला लो॥
जिन से निज के प्रक्षालन को, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, फल स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं.....।

हम अर्घ चढ़ायें गुण गायें, हम करें नमोस्तु जिन-सेवा।
क्या? इससे नाथ तुम्हें मिलता, पर हमें प्राप्त हो सुख मेवा॥
निज-मुक्ति भक्ति से पाने को, हम भेंट नमोस्तु लाये हैं।
नमिनाथप्रभु की पूजा में, सब स्वाहा करने आये हैं॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

क्वाँर कृष्ण की दूज को, तज अपराजित स्वर्ग।
आये प्रभु नमिनाथ जी, वप्पिला माँ के गर्भ॥ 1॥

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

दसें कृष्ण आषाढ़ को, जन्मे प्रभु नमिनाथ।
लड्डू राजा विजय ने, बाँटे, नाँचे साथ॥ 2॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संत जन्म तिथि में बनें, पा रत्नत्रय वस्तु।
निर्ग्रंथी नमिनाथ को, बारम्बार नमोस्तु॥ 3॥

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णदशम्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

ग्यारस अगहन शुक्ल में, हुआ ज्ञान कल्याण।
परमपिता नमिनाथ को, दुनियाँ करे प्रणाम॥ 4॥

ॐ ह्रीं मगसिरशुक्ल-एकादशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

चौदस कृष्ण वैशाख को, मोक्ष गए नमिनाथ।
शिखर मित्रधरकूट को, नमन करें नत माथ॥ 5॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जयमाला

(दोहा)

वीतराग सर्वज्ञ प्रभु, शुद्धातम सरताज।
ऐसे प्रभु नमिनाथ को, करें नमोस्तु आज॥

(काव्य रोला)

करें नमोस्तु आज, काज केवल गुणगाना।
गुणगाने का राज, राज आतम का पाना॥
आतम पाके धाम, मोक्ष शाश्वत अपनाना।
शाश्वत नमि भगवान्, अतः सिर तुम्हें झुकाना॥

(ज्ञानोदय)

जय नमिनाथ परम अवतारी, आप अंत संसारी हो।
शुद्ध मोक्ष निज के रसिया पर, हितकारी संसारी को॥
अद्वितीय यह कला आपकी, खूब रुचे संसारी को।
चरण-शरण में रहे कहें गुण, रह न सके संसारी वो॥ 1॥

पिछले भव सिद्धार्थ नाम के, राजा ने जिनदीक्षा ली।
तीर्थंकर प्रकृति बाँधी फिर, मृत्यु महोत्सव शिक्षा ली॥
अपराजित के स्वर्ग भोगकर, धरती पर अवतरित हुए।
तब मिथिला के राजा रानी, विजय वप्पिला जन्म दिए॥ 2॥

गर्भ जन्म के पर्व देव कर, नामकरण नमिनाथ किए।
ढाई हजार वर्ष का भोगा, कुमारकाल फिर राज्य किए॥
पाँच हजार वर्ष का भोगा, राज्यकाल फिर कर चिन्तन।
इस प्राणी ने स्वयं फँसाया, काल कोठरी में चेतन॥ 3॥

ज्यों पिंजड़े में पक्षी दुखिया, बँधा हुआ हाथी रोता।
त्यों विषयों में मस्त जीव यह, निज अध्यात्म तत्त्व खोता॥
विष्ठा के कीड़े के जैसे, पाप-राग नित करता है।
हाय! हाय! फिर आर्त रौद्र कर, बिन रत्नत्रय मरता है॥ 4॥
तब लौकान्तिक देव सराहे, नमिनाथ के चिंतन को।
जग तज बैठ मनोहर शिविका, स्वामी चले चैत्र-वन को॥
बने दिगम्बर, धरती अम्बर, गूँजे जय-जयकारों से।
दंतराज के हुई पारणा, पंचाश्चर्य नगाड़ों से॥ 5॥

जब छद्मस्थ वर्ष नव बीते, तभी बकुल तरुतल में जा।
बेला का संकल्प निभाकर, केवलज्ञान लिया उपजा॥
समवसरण में दिव्य-देशना, 'पुण्यफला' ने दे डाली।
जिससे सबने राग-रमा की, भव पर्याय भुला डाली॥ 6॥

मरण-मूलधन लेकर प्राणी, कर्जदार हो मृत्यु का।
जन्म-जन्म में कष्ट भोगता, कर्ज बढ़ाये दुर्गति का॥
किन्तु जीव रत्नत्रय धन का, जब तक अर्जन करे नहीं।
तब तक मृत्यु साहुकार का ब्याज मूलधन चुके नहीं॥ 7॥

अतः धारकर रत्नत्रय को, स्वस्थ बनो आतम-भोगी।
तत्त्व देशना ऐसी देकर, नाथ! बने प्रतिमायोगी॥
श्री सम्मेदशिखर से नमिजिन, चतुर्दशी को मोक्ष गए।
मोक्ष पर्व से पुण्य कमाकर, देव स्वर्ग को लौट गए॥ 8॥

इसी तीर्थ में ग्यारहवें जय-सेन चक्रवर्ती जन्मे।
चौदह रत्न नवो निधियाँ थीं, दसों भोग थे जीवन में॥
इक दिन उल्कापात देखकर, राज-पाठ वैभव छोड़े।
तप करके अहमिन्द्र बने सो, तपोधनों को सिर मोड़ें॥ 9॥

ऐसे प्रभु नमिनाथ देव ने, हर कर्मों से युद्ध किया।
अहित जीतकर, मुक्ति प्रीतकर, अपना आतम शुद्ध किया॥
जिनके दिल में नमिनाथ हैं, शुद्ध बुद्ध खुद बनते वे।
उन्हें रहे क्या बुध ग्रह पीड़ा, मोक्ष महल में वसते वे॥ 10॥
लेकिन दूरी मिटी न अपनी, लक्ष्य दूर है राह बड़ी।
छोटे से हम भक्तों के दिल, फँसे न जग में फिकर खड़ी॥
वैरी दुनियाँ नित मारे पर, उसका कुछ भी असर नहीं।
'सुव्रत' पर बस यही कृपा हो, जिसकी जग को खबर नहीं॥ 11॥

(सोरठा)

नीलकमल है चिह्न, तीर्थंकर नमिनाथ हो।
हम पर रहो प्रसन्न, निजानुभव को साथ दो॥
हे स्वामी! जिनदेव, स्वार्थ रहित ये भक्तियाँ।
करती हैं स्वयमेव, भक्त जगत् की मुक्तियाँ॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

विधान अर्घ्यावली

(इन्द्रिय संयम के विरोधी 28 विषय)

(काव्य रोला)

संयम है सुखकार, जिसे गुणशीत सताये।
आप शीत को जीत, आत्म से प्रीत लगाये॥

स्पर्शन का गुण शीत, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 1॥

ॐ ह्रीं शीतप्रकोपबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम मुक्ति-द्वार जिसे गुण उष्ण तपाये।
आप उष्ण को जीत, शुद्ध आतम प्रकटाये॥
स्पर्शन का गुण उष्ण, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 2॥

ॐ ह्रीं उष्णप्रकोपबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम गुण भण्डार, जिसे गुण रूक्ष रुलाये।
आप रूक्ष को जीत, रूप चिदातम पाये॥
स्पर्शन का गुण रूक्ष, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 3॥

ॐ ह्रीं रुक्षस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम दृढ संकल्प, जिसे गुण स्निग्ध नशाये।
आप स्निग्ध को जीत, निराकुलता सुख पाये॥
स्पर्शन का गुण स्निग्ध, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 4॥

ॐ ह्रीं स्निग्धस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम प्रेम फुहार, जिसे कोमलता काटे।
कोमलता प्रभु जीत, कर्म की कड़ियाँ काटे॥
स्पर्शन का गुण नर्म, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 5॥

ॐ ह्रीं नर्मस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम भरे हिलोर, जिसे कठोरता बाँधे।
कठोरता प्रभु जीत, आत्म कंचन सी साधे॥

स्पर्शन का गुण सख्त, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 6॥

ॐ ह्रीं कठोरस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम है अनमोल, जिसे गुण हल्का रोके।
हल्का गुण प्रभु जीत, धनी हो अपने होके॥
स्पर्शन का लघु भाव, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 7॥

ॐ ह्रीं लघुतास्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम है शक्ति अपार, जिसे गुण भारी लूटे।
भारी गुण प्रभु जीत, तभी भव बंधन टूटे॥
स्पर्शन का गुरु भाव, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 8॥

ॐ ह्रीं गुरुतास्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम है रसदार, जिसे गुण खट्टा खाले।
खट्टा गुण प्रभु जीत, हुए निज आत्म हवाले॥
रसना का गुण अम्ल, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 9॥

ॐ ह्रीं अम्लता (एसीडिटी) स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम आतम सार, जिसे गुण मीठा मारे।
मीठा गुण प्रभु जीत, रूप सर्वज्ञ छुआ रे॥
रसना का गुण मिष्ठ, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 10॥

ॐ ह्रीं मधुरता (शुगर) मधुमेहस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम है अमरत्व, जिसे गुण कडुआ घाते।
कडुआ गुण प्रभु जीत, प्रेम-प्रसाद लुटाते॥

रसना का गुण कटुक, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 11॥

ॐ ह्रीं कटुकस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम करुणा धार, जिसे गुण हरे कसैला।
प्रभु! कसैला जीत, तभी जग में यश फैला॥
रसना स्वाद कषाय, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 12॥

ॐ ह्रीं कसैलास्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम चिच्चमत्कार, जिसे गुण तीक्ष्ण विनाशे।
प्रभु! तीक्ष्णता जीत, धर्म का तीर्थ विकासे॥
रसना का गुण तीक्ष्ण, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 13॥

ॐ ह्रीं तीक्ष्ण (चरपरा) स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम आत्म सुगन्ध, जिसे कि सुगन्ध मिटाये।
सुगन्ध गुण प्रभु जीत, आत्म सौरभ महकाये॥
नासा-विषय सुगंध, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 14॥

ॐ ह्रीं सुगंधस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम यश का इत्र, जिसे दुर्गंध दबा दे।
ईश! जीत दुर्गंध, शरण में रखो दया दे॥
नासा-गुण दुर्गंध, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 15॥

ॐ ह्रीं दुर्गन्धस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम निज शृंगार, जिसे रंग काला ढाँके।
काला रंग प्रभु जीत, विश्व की सीमा लाँघे॥

चक्षु गुण रंग श्याम, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 16॥

ॐ ह्रीं श्यामवर्णस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम है निर्ग्रंथ, जिसे रंग नीला निगले।
नीला रंग प्रभु जीत, सभी से आगे निकले॥
चक्षु गुण रंग नील, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 17॥

ॐ ह्रीं नीलवर्णस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम निज संस्कार, जिसे रंग पीला पटके।
पीला रंग प्रभु जीत, वसे दुनियाँ से हट के॥
चक्षु गुण रंग पीत, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 18॥

ॐ ह्रीं पीतवर्णस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम सुंदर रूप, जिसे रंग लाल लजाये।
लाल रंग प्रभु जीत, आत्म का नगर वसाये॥
चक्षु गुण रंग लाल, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 19॥

ॐ ह्रीं रक्तवर्णस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम निज आकर्ष, जिसे रंग श्वेत सड़ाये।
श्वेत रंग प्रभु जीत, मोक्ष तक आत्म चढ़ाये॥
चक्षु गुण रंग श्वेत, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 20॥

ॐ ह्रीं श्वेतवर्णस्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम निज सुर ताल, जिसे 'सा'-षड्ज सुखाये।
'सा' सुर को प्रभु जीत, आत्म संगीत सुहाये॥

कर्ण-विषय सा-शब्द, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 21॥

ॐ ह्रीं षड्ज-सा-स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम आतम साज, जिसे 'रे' ऋषभ रिसाये।
'रे' सुर को प्रभु जीत, स्वरूपी साधन पाये॥
कर्ण-विषय रे-शब्द, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 22॥

ॐ ह्रीं ऋषभ-रे-स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम अक्षर माल, जिसे गांधार गँवाये।
'गा' सुर को प्रभु जीत, गुणी-गरिमा प्रकटाये॥
कर्ण-विषय गा-शब्द, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 23॥

ॐ ह्रीं गान्धार-गा-स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम महिमावंत, जिसे 'मा' मध्यम मोहे।
'मा' सुर को प्रभु जीत, लोक के सिर पर सोहे॥
कर्ण-विषय मा-शब्द, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 24॥

ॐ ह्रीं मध्यम-मा-स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम परम पवित्र, जिसे 'प' पंचम पीटे।
'प' सुर को प्रभु जीत, पुण्य के मारो छींटे॥
कर्ण-विषय प-शब्द, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 25॥

ॐ ह्रीं पञ्चम-प-स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम पावन धर्म, जिसे 'ध' धैवत धौंके।
'ध' सुर को प्रभु जीत, मसाले निज के छौंके॥
कर्ण-विषय ध-शब्द, विजय हम करें जयोस्तु।

अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 26॥

ॐ ह्रीं धैवत-ध-स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम सुख निर्वाण, जिसे नि-निषाद निचोड़े।
नि-सुर को प्रभु जीत, नाम तक जग का छोड़े॥
कर्ण-विषय नि-शब्द, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 27॥

ॐ ह्रीं निषाद-नि-स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

संयम सौख्य अपार, जिसे मन मोर मरोड़े।
मन का मत्त मयूर, जीत निज नाता जोड़े॥
मन के विषय समस्त, विजय हम करें जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥ 28॥

ॐ ह्रीं मन-स्वभावविभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

पूर्णार्घ्य

यह संसार असार, असंयम दुख ही देता।
जो दुख का विष वृक्ष, काटने संयम लेता॥
ले तप त्याग कुठार, पाप-वन काट गिराये।
पाये सुख साम्राज्य, आत्म का वैभव पाये॥

करके यही विचार, तजे जग-इन्द्री नाते।
वीतराग नमिनाथ, बने सर्वोच्च कहाते॥
तुम्हें भेंट के अर्घ, आप सम होंए जयोस्तु।
अतः पूज्य नमिनाथ, तुम्हें हम करें नमोस्तु॥

(दोहा)

इन्द्रिय जय की साधना, करती आत्म विभोर।
अतः प्रभु नमिनाथ जी, थामो भाक्तिक डोर॥ 29॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशति इन्द्रियविषय स्वभावबाधाविनाशनसमर्थ श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं.....।

जाप्यमंत्र : ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री नमिनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

हृदय कमल में भक्त जो, धारें प्रभु का नाम।
उसे मुक्ति नमिनाथ दें, जिनको विनत प्रणाम॥
विश्व सुखों की बात क्या, मिले स्वयं निर्वाण।
उसी भाव से गुण कहें, यही भक्त कल्याण॥

(वीर/पंवारा/आल्हा/मात्रिकसवैया)

जय-जय-जय नमिनाथ जिनेश्वर, कितना सुंदर तेरा नाम।
नाम आपका इतना सुंदर, कितना दर्शन लगे ललाम॥
दर्शन इतना सुंदर है तो, कितना सुंदर होगा धाम।
धाम प्राप्त कर कौन चाहता, इससे दूर वसाना ग्राम॥ 1॥

बने आपसे मन यह मंदिर, हर्षित हुए हृदय के हाल।
देह बना देहालय जैसा, हँसे होंठ खुश होते गाल॥
गद्‌गद् हुयी गात्र की गरिमा, जन्म समझते हम तो धन्य।
फिर भी क्यों कल्याण हुआ ना, यही सोचकर हम हैं खिन्न॥ 2॥

इसका कारण एक ही लगता, बनें इंद्रियों के हम दास।
सब कुछ दुख तो सहन करें पर, धार सकें ना हम संन्यास॥
स्पर्शन के ही वशीभूत हो, गज दुर्दशा सहें दिन रात।
रसना के वश फँसे जाल में, मछली तड़फे प्राण गँवात॥ 3॥

पुष्प गंध से दम घुट-घुट के, भौंरे मरते आकुल होंए।
चक्षु के वश मरें पतंगे, जल-जलकर हो व्याकुल रोंए॥
कर्ण स्वरों के वशीभूत हो, हिरण सर्प के होते नाश।
फिर पाँचों में फँसे मनुज का, क्या होगा ना सत्यानाश?॥ 4॥

बहुत तरह की पहली इंद्री, करे स्पर्श जो आठ प्रकार।
कमल एक हजार योजन का, आयु वर्ष है दशक हजार॥

खुरपा सी रसना रस चखती, मुख्य रूप से पाँच प्रकार।
शंख मिले बारह योजन का, उत्कृष्ट आयु बारह साल॥ 5॥

तिल-पुष्पों सी घ्राण सूँघती, सुरभी-दुरभी दो विध खास।
तीन कोस की कुम्भी मिलती, उत्कृष्ट आयु दिन उन्चास॥
चक्षु इंद्री मसूर जैसी, देखे मुख्य पाँच रंग राह।
मिलें एक योजन के भौंरे, उत्कृष्ट आयु है छह माह॥ 6॥

कर्णेन्द्री जव नली सरीखी, सुनें सात सुर मुख्य प्रकार।
पूर्व कोटि वय महामत्स्य की, फैले योजन एक हजार॥
दीप स्वयंभू रमण सिन्धु में, है उत्कृष्ट आयु अवगाह।
इनमें फँसे आज तक मन को, केवल मिली पतन की राह॥ 7॥

हे! नमिनाथ कृपा यह कर दो, इंद्रियों के न बनें गुलाम।
हमें इन्द्रियाँ नचा न पावें, मिले आपका प्यारा धाम॥
वीतराग विज्ञान मात्र को, केवल झुके हमारा शीश।
प्राण भले ही चले जाँए पर, धर्म न जाये दो आशीष॥ 8॥

हाथ आपके चरण छुयें बस, जीभ आपके गाये गान।
नासा ले चारित्र गंध बस, नयन निहारे जिन भगवान्॥
तत्त्व देशना कान सुने बस, श्रुत स्वरूप मन करे विचार।
हृदय देह का अर्घ्य भेंटकर, नमस्कार हो आत्म सुधार॥ 9॥

भोग बड़े से बड़े विश्व के, भक्ति आपकी करे प्रदान।
जो निर्माण भक्त का करके, कर निर्वाह करें निर्वाण॥
इसमें सभी न सक्षम इससे तुम्हीं आत्म का दो संन्यास।
'सुव्रत' तो बस करें नमोस्तु, आप बुला लो अपने पास॥ 10॥

(सोरठा)

काया का श्रृंगार, करना अपनी भूल थी।
तुम्हें देख नमिनाथ, काया सजना भूलती॥

हो निज का शृंगार, अतः रचायी अर्चना।
मिले भवोदधि पार, यही भक्त की प्रार्थना॥

ॐ ह्रीं श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय समुच्चयजयमालापूर्णार्घ्यं.....।

नमिनाथ स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा...)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेंट दो, नमिनाथ जिनराय॥

(पुष्पाञ्जलिं....)

॥ इति श्री नमिनाथविधान सम्पूर्णम्॥

प्रशस्ति

है 'बामौर कलाँ' जहाँ, मूल पार्श्व भगवान्।
वहीं काव्य पूरा हुआ, प्रभु नमिनाथ विधान॥
दो हजार चौदह भौम्, मार्च चार तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

॥ इति शुभम् भूयात्॥

आरती

(लय : गुरुदेव तुमको नमस्ते[2])

नमोस्तु नमोस्तु हे! नमिनाथ तुमको।
करें आरती दे दो आशीष हमको॥

माँ वप्पिला और राजा विजय के।
प्रभु आप नंदन मिथिला नगर के॥
हे! आत्म दीपक, उजारो तुम सबको,
करें आरती .....॥ 1॥

रहे देह में किंतु बनकर विदेही।
बंधन न भाया बँधकर रहे भी॥
अब वीतरागी, बना तो लो जग को,
करें आरती .....॥ 2॥

बिना राग तुमने संसार तारा।
बिना द्वेष तुमने कर्मों को मारा॥
सुन लो सुनायी जो अर्जी है तुमको,
करें आरती .....॥ 3॥

नहीं आप जैसा इस जग में दूजा।
कर्मों से ऊऋण होने को पूजा॥
अपनी शरण में ले लो 'सुव्रत' को,
करें आरती .....॥ 4॥